B-2
L-27
Modern India

दिनांक
25-01-24

भारत छोड़ो आंदोलन स्वतः स्फूर्त था या नहीं

• स्वतः स्फूर्त का आशय एक ऐसे आंदोलन से है जिसमें संगठन, नेतृत्व व विचारधारा की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि जनता स्वयं ही आंदोलित होती है, इसे क्षैतिज आंदोलन भी कहा जाता है।

• 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन स्वतः स्फूर्तता की श्रेणी में आ खड़ा होता है, क्योंकि जिस तरह यह आंदोलन बिना शीर्ष नेतृत्व के सम्पूर्ण भारत में प्रसारित हुआ और लोगों ने अपने वैचारिक, सामाजिक व आर्थिक मतभेदों को भुलाकर जिस तरह बड़ी संख्या में सक्रियता से भाग लिया तथा ब्रिटिश सत्ता के प्रतीकों पर करारा प्रहार किया, यह स्पष्ट कर देता है कि अब प्रायः प्रत्येक भारतीय आजादी में अपनी सक्रिय भूमिका दर्ज

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

कराना चाहता था, अतः वह अपना मार्गदर्शक स्वयं बना।

- इस तरह भारत छोड़ो आंदोलन को केवल गाँधीवादी रणनीति का आंदोलन मानना आंशिक सत्य होगा तो इसे केवल स्वतःस्फूर्त आंदोलन मानना भी गाँधीवादी रणनीति व अगस्त प्रस्ताव के साथ पूर्ण न्याय करना नहीं होगा। वस्तुतः इस आंदोलन का आरंभ तो गांधीवादी तरीके से हुआ, किन्तु राष्ट्रवादी चेतना के विस्फोट व अंग्रेजों की दमनात्मक कार्यवाही से जिस तरह लोगों ने इसमें सक्रिय भूमिका निभायी, उससे इस आंदोलन में स्वतः स्फूर्तता के तत्व अवश्य जुड़ जाते हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
© KHAN Sir

आजाद हिन्द फौज व सुभाषचन्द्र बोस

• 1940 के दशक में हमारे स्वतंत्रता संग्राम को एक अनोखी अभिव्यक्ति तब मिली, जब भारतीय भूमि से बाहर आजाद हिन्द फौज के नेतृत्व में सशस्त्र युद्ध के द्वारा भारत से ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकने का प्रयास किया गया।

• स्मरणीय है कि सर्वप्रथम आजाद हिन्द फौज के गठन का विचार कैप्टन मोहन सिंह के मस्तिष्क में आया, जब जापान ने मलाया व सिंगापुर पर आक्रमण कर दिया तो अंग्रेज वहां के निवासियों व भारतीय सैनिकों को उनके हालात पर छोड़कर चले गए और इन्हीं भारतीय युद्धबंदी सैनिकों को लेकर आजाद हिन्द फौज के गठन की नींव पड़ी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
© KHAN SIR

• पंजाब में सशस्त्र विद्रोह (गदर आंदोलन) की असफलता के बाद रासबिहारी बोस जैसे क्रांतिकारी जापान आ चुके थे और इन्हीं के नेतृत्व में "इण्डिया इंडिपेंडेंस लीग" को व्यवस्थित रूप दिया गया और 1943 में जब सुभाषचन्द्र बोस ने इसका नेतृत्व संभाला, तो इसकी लोकप्रियता में अत्यधिक वृद्धि हुई।

• सुभाष ने जापान की मदद से सशस्त्र युद्ध के द्वारा भारत की आजादी का सपना बुना और सहायता लेने से पहले सुभाष ने यह आकलन कर लिया कि जापानियों का भारतीय क्षेत्र में कोई लालच नहीं है, जैसा कि उन्हें हिटलर के साथ महसूस हुआ था।

• इसी के साथ भारत में राष्ट्रीय संघर्ष

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

तथा बाहरी देश की मदद से आजादी की दोहरी रणनीति अपनायी गयी, जिसका ब्रिटिश सत्ता पर व्यापक प्रभाव पड़ा। सुभाष के नेतृत्व संभालने के बाद सिंगापुर में अस्थायी आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की गयी जिसे धुरी राष्ट्रों सहित नौ देशों ने मान्यता भी दे दी।

- आजाद हिन्द फौज जापानी सेना के साथ रणनीतिक तरीके से भारत की ओर बढ़ने लगी तथा अण्डमान व निकोबार पर विजय हासिल कर उसका नामकरण क्रमशः शहीद व स्वराज कर दिया और भारत की आजादी का संकेत दे दिया और यहां का प्रशासन भी फौज के अधिकारियों ने ही संभाला। इस घटना से न सिर्फ फौज का आत्मविश्वास बढ़ा, बल्कि भारत की जनता भी अपनी आजादी के प्रति उत्साहित हो उठी और सुभाष

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

का नारा, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा", लोगों को आकर्षित करने लगा इस तरह इस दौर में भारत छोड़ो आंदोलन तथा फौज की कार्यवाही ने भारतीय राष्ट्रवाद को विस्फोटक बना दिया और भारतीयों को अपनी आजादी नजदीक दिखने लगी।

आजाद हिन्द फौज का प्रसार / योगदान

- फौज की कार्यवाहियों से अब यह सिद्ध हो गया कि भारत के लोग अब किसी भी तरह से अपनी आजादी के लिए सक्रिय हो उठे हैं, चाहे वह सशस्त्र युद्ध का ही विकल्प क्यों न हो।

- फौज की कार्यवाही ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि भारतीय सैनिकों के मन में अब ब्रिटिश सत्ता के लिए सकारात्मक भाव नहीं रहा और जब सैनिक ही विद्रोही होने लगे तो ब्रिटिश साम्राज्य का स्थायित्व डगमगाने लगा।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

• फौज की महिला ब्रिगेड ने जिस तरह सैन्य गतिविधियों में भाग लिया, उसने भारतीय महिलाओं की सशस्त्र युद्ध क्षमता को स्पष्ट कर दिया और यह निश्चित हो गया कि अब प्रत्येक भारतीय चाहे महिला हो या पुरुष भारत की आजादी में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने के लिए उतावला हो चला है।

• सुभाष का व्यक्तित्व, उनका क्रांतिकारी नारा और फौज की गतिविधियां प्रायः हर भारतीय को राष्ट्रीय संघर्ष में भाग लेने के लिए आकर्षित कर रही थीं और अण्डमान निकोबार पर विजय के बाद लोगों को यह लगने लगा कि आजादी अब बहुत करीब है।

• भारत की मुख्य भूमि पर भारत छोड़ो आंदोलन जब-जब धीमा हुआ, फौज की कार्यवाही

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

व उसके रेडियो प्रसारण ने तब-तब भारतीयों में पुनः नया जोश व नयी ऊर्जा संचारित कर आजादी की लड़ाई में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों भूमिकाएं निभायीं।

- वस्तुतः गाँधी की अहिंसा के साथ ही सुभाष के रक्त और खून की नीति ने हमारे राष्ट्रीय संघर्ष को और प्रखर बना दिया।

आजाद हिन्द फौज की असफलता के कारण

- 1945 में जब अमेरिका ने जापान पर परमाणु बम गिराया तो जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया और विदेशी मदद से भारत की आजादी का सपना अधूरा रह गया।
- अण्डमान-निकोबार की विजय के बाद शहनवाज खान के नेतृत्व में फौज ने इंफाल अभियान

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

के लिए कूच किया, किन्तु इस अभियान की असफलता के बाद जापानी अधिकारियों द्वारा पूरी तरह सहायता न दिए जाने से फौज के सैनिकों का मनोबल भी प्रभावित होने लगा।

- सुभाष के आकस्मिक रूप से लापता होने के कारण भी फौज की संचालन क्षमता प्रभावित हुई और ब्रिटिशों द्वारा फौज के मुख्य अधिकारियों की गिरफ्तारी के बाद नेतृत्वविहीनता की स्थिति पैदा हो गयी।
- इस तरह आजाद हिन्द फौज भारत को स्वतंत्र तो न करा पायी किन्तु अपनी गतिविधियों से उसने यह एहसास दिला दिया कि अब अगली मंजिल भारत की आजादी ही है। वस्तुतः फौज की कार्यवाही ने ब्रिटिश सत्ता को एक मनोवैज्ञानिक दबाव में ला दिया और ब्रिटिश सिविल सेवक अब भारत में रहने

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

के इच्छुक नहीं रहे और ब्रिटिश अधिकारियों ने स्वीकारा कि सुभाष के नेतृत्व में फौज की कार्यवाहियों ने उन्हें भारत को जल्द आजाद करने पर विवश कर दिया।

लालकिला मुकदमा (1945)

- आजाद हिन्द फौज के तीन अधिकारियों प्रेम सहगल, शाहनवाज खान व गुरबख्शसिंह ढिल्लन, जो अलग-अलग सम्प्रदायों से थे को गिरफ्तार कर लालकिला मुकदमा चलाया गया।
- 1945 की इस घटना के समय साम्प्रदायिक विभेद हिन्दू-मुस्लिम एकता को खण्डित कर रहा था, तो इस केस ने भारतीय जनता को अपने मतभेद भुलाकर एकजुट करने का कार्य किया अर्थात् साम्प्रदायिकता के कारण जब राष्ट्रीय संघर्ष कमजोर होने लगा था,

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

तो लालकिला केस ने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एकजुट होने और राष्ट्रीय संघर्ष को प्रभावी बनाने में उत्प्रेरक का कार्य किया।

• इस मुद्दे पर भारतीय असंतोष को देखते हुए ब्रिटिश सेना के कमाण्डर को अपने विशेषाधिकार का उपयोग करते हुए इन्हें मुक्त करने का आदेश देना पड़ा।

[भूलाभाई देसाई के नेतृत्व में वकीलों की समिति ने फौज के अधिकारियों का बचाव बहुत ही ताकिक रूप से किया]

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

प्रश्नः- कांग्रेस का त्रिपुरी संकट, जहां सुभाष को इस्तीफा देना पड़ा, यह दर्शाता है कि सुभाष और गांधी के मतभेद इतने व्यापक हो चुके थे तथा गांधी की नीतियों में सुभाष को विश्वास नहीं रह गया था।

उत्तरः- • 1939 में कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन

में गाँधी के प्रत्याशी पट्टाभि सीतारमैया को हराकर सुभाष का निर्वाचित होना और फिर गाँधी तथा उनके अनुयायियों का विरोध देखते हुए सुभाष का कॉंग्रेस से इस्तीफा दे देना तथा फारवर्ड ब्लाक नामक नए दल की स्थापना करना यह संकेत देता है कि गाँधी और सुभाष के बीच मतभेद व्यापक हो गए तथा ऐसा भी कहा जाने लगा कि ये दोनों एक-दूसरे के विरोधी हो जायेंगे।

वस्तुतः गाँधी और सुभाष के बीच मतभेद निम्नलिखित बिन्दुओं पर थे:-

(i) गाँधीवादी रणनीति में अहिंसा को ही सर्वोच्च माना गया, जबकि बोस समय व परिस्थितियों के अनुसार हिंसा व सशस्त्र युद्ध का भी समर्थन करते हैं और यहाँ तक कि चाणक्य नीति अपनाते हुए भारत की आजादी

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

के लिए जापान की मदद लेते हैं, जो गाँधी को स्वीकार्य नहीं था।

(ii) आजादी के लिए गाँधी जहाँ विकेन्द्रीकरण का समर्थन करते हैं, तो वहीं सुभाष केन्द्रीय सत्ता को शक्तिशाली बनाने का समर्थन करते हैं।

(iii) सुभाष समाजवादी विचारों से प्रेरित थे अतः वे राज्य के नियंत्रण में ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना चाहते थे, जहाँ सभी को समान अधिकार व समान अवसर मिले, जबकि गाँधी की अपनी मौलिक सोच सर्वोदय व अंत्योदय को प्राप्त करना था।

इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि दोनों महान नेताओं के बीच मतभेद तो अवश्य थे, लेकिन यह नहीं स्वीकारा जा सकता कि दोनों एक-दूसरे के विरोधी हो गए थे। वस्तुतः सुभाष गाँधी के नेतृत्व में ही आजादी प्राप्त करने के समर्थक थे तथा आजाद हिन्द

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

फौज रेडियो से उन्होंने ही [redacted] गाँधी को पहली बार राष्ट्रपिता संबोधित किया था। तो दूसरी तरफ गाँधी भी सुभाष को परम देशभक्त मानते रहे।

इस तरह दोनों के विचारों व रणनीति में भिन्नता भले ही रही हो और वैचारिक भिन्नता ही तो महान व्यक्तित्वों को प्रतिष्ठित करती है तथा हमारी आजादी की लड़ाई के स्वरूप को और व्यापक बनाती है। इसी संदर्भ में हमारा राष्ट्रीय संघर्ष विभिन्न विचारधाराओं और रणनीतियों का समन्वय कहा जाता है। अतः इनकी वैचारिक भिन्नता ने हमारे राष्ट्रीय संघर्ष को और सर्वांगीण बना दिया। दोनों के बीच मतभेद भले ही बने रहे, किन्तु सुभाष ने गाँधी के नेतृत्व में कभी अनास्था नहीं दिखायी, तो वहीं गांधी ने भी सुभाष के राष्ट्रप्रेम को सदैव महत्व दिया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform